अकबर (1542-1605) महान नहीं, क्रूरतम अत्याचारी था

तैमूरलंग और चंगेजखां - दो क्रूरतम अत्याचारी हुए हैं। अकबर की रगों में इन्हीं का खून था - पिता की तरफ से तैमूरलंग का और माता की तरफ से चंगेजखां का।

अकबर का शरीर - (विंसैंट स्मिथ के अनुसार) - ऊंचाई लगभग 5 फुट 7 इंच, चौड़ी छाती, पतली कमर और लम्बे बाजू। उसके पैर अन्दर की ओर झुके हुए थे। चलते समय वह अपने बाएं पैर को कुछ घसीटता हुआ चलता था, मानो लंगड़ा हो। उसका सिर दाएं कंधे की ओर कुछ झुका हुआ था। नाक कुछ छोटी थी, बीच की हड्डी कुछ उभरी हुई थी। नथने ऐसे लगते थे मानो क्रोध में फूले हों। मटर के आधे दाने के आकार का एक मस्सा उसके ऊपरी होंठ को नथने से जोड़ता था। उसका रंग श्यामल था।

पादरी एंथनी मांसरेत अकबर के दरबार में गए थे। वे लिखते हैं - अकबर के कन्धे चौड़े तथा पैर कुछ घुमावदार हैं। रंग कुछ हल्का भूरा है। वह अपना सिर अधिकतर दाहिने कंधे की ओर झुकाए रखता है। माथा चौड़ा है, आँखें चमकती हैं। उसकी पलकों के बाल बहुत लम्बे हैं, नाक छोटी और सीधी है, नथने काफी फूले हैं जैसे उपहास की मुद्रा में हो। बाएं नथने तथा होंठ के बीच एक काला तिल है, दाढ़ी सफाचट है, परन्तु मूंछ रखता है। उसके बाल लम्बे हैं। टोपी वह नहीं लगाता, अपनी पगड़ी में ही सारे बाल घुसेड़ लेता है। बाएं पैर से कुछ लंगड़ाता है।

अकबर पूरी तरह अनपढ़ था तथा शराब पीने का व्यसनी था। वह अत्यंत कामी था। उसके हरम में बहुत सी स्त्रियां थीं। हारे हुए राजाओं के घरों से मनपंसद महिलाओं को अकबर अपने हरम में भरती कर लेता था।

आगरा के लाल किले में भारत सरकार के पुरातत्त्व विभाग का नीला बोर्ड़ लगा हुआ है। उस पर लिखा है कि यहां अकबर पाँच हजार औरतें रखता था। (आचार्य नरेश)

अकबर की आँख उसके संरक्षक बैरम खां की पत्नी पर लग गई थी। उसने बैरम खां की नृशंस हत्या करवाने के बाद उसकी पत्नी से शादी कर ली थी।

मीना बाजार नाम की एक प्रथा थी जिसके अनुसार नए साल के दिन सब घरों की महिलाओं को अकबर के सामने से गुजरना होता था ताकि वह अपनी रुचि के अनुसार उनमें से किसी को चुन सके।

पानीपत के युद्ध के पश्चात 6 नवम्बर 1556 के दिन जब अकबर के सामने घायल तथा अर्धचेतन अवस्था में हेमू (हेमचन्द्र) को लाया गया तब अकबर ने अपनी टेढ़ी तलवार से उसकी गरदन पर प्रहार किया। अकबर उस समय 14 वर्ष का था। (विंसैंट स्मिथ)

चित्तौड़गढ़ के किले को जीतने के बाद अकबर ने वहां मौजूद सेना तथा अन्य लोगों का कत्लेआम करवाया। विंसैंट स्मिथ के अनुसार इस कत्लेआम में 30,000 लोग मारे गए थे। कर्नल टाड का कहना है कि चित्तौड़ को जीतने के बाद अकबर ने बचे हुए सभी स्मारकों को तोड़ दिया था।

अकबर नामा - अबुज फजल - जिहादी अकबर - फतहनामा चित्तौड़ 1568 में लिखा है कि उस युद्ध को देखने हेतु बिना हथियार आसपास खड़े 40,000 हिन्दू किसानों को मौत के घाट उतार दिया गया। (आचार्य नरेश)

सन 1572 के नवम्बर मास में जब अकबर अहमदाबाद के शासक मुजफरशाह को हराकर बन्दी बना चुका था, तब उसने आज्ञा दी थी कि विरोधियों को हाथियों के पैरों तले रौंदकर मार डाला जाए।

मसूद हुसैन मिर्जा अकबर का निकट सम्बन्धी था। उसने अकबर के विरुद्ध बगावत की और वह पकड़ा गया। उसकी आँखों को सुई से सी दिया गया और उसके 300 साथियों को तड़पा-तड़पा कर मारा गया।

थानेसर के पवित्र कुण्ड पर इक्कठे हुए साधु 'कुरु' और 'पुरी' दो भागों में बंटे थे। अकबर अपने सेवकों के साथ वहां उपस्थित था। पुरी वालों ने बादशाह से शिकायत की कि कुरु वालों ने उनका बैठने का स्थान अवैध रूप से छीन लिया है। इसलिए वे जनता के दान से वंचित रह गए हैं। अकबर की ओर से उन्हें कहा गया कि वे आपस में युद्ध करके निर्णय करलें। दोनों ओर के लोगों को शस्त्र देकर लड़ाया गया। जो पलड़ा हल्का पड़ता बादशाह अपने लोगों को उनकी सहायता करने को कहता। अंत में दोनों वर्गों के लोग अकबर के सैनिकों द्वारा पूरी तरह समाप्त कर दिये गये। (विंसैंट स्मिथ)

हल्दी घाटी के युद्ध में राणा प्रताप और अकबर - दोनों की सेनाओं में राजपूत बहुतायत में थे। जब दोनों ओर से घमासान युद्ध हो रहा था तब अकबर की ओर से लड़ रहे बदायूनी ने अपने सेनानायक से पूछा कि वह कहां गोली चलाए क्योंकि यह पहचानना कठिन है कि कौन सा राजपूत हमारी ओर है और कौनसा राणा प्रताप की ओर है। बदायूनी का कहना है कि उसे उत्तर मिला कि इसमें कोई फर्क नहीं पड़ता। जो भी राजपूत मरेगा इससे इस्लाम का ही लाभ होगा।

सन 1603 की घटना है। अकबर दोपहर के विश्राम के बाद कुछ जल्दी उठ खड़ा हुआ। उसे कोई सेवक न दिखा, परन्तु एक मशालची सोया मिला। अकबर ने क्रोध में आकर उस मशालची को मीनार से नीचे जमीन पर पटकने का आदेश दे दिया।

अकबर अपने आप को पैगम्बर की भान्ति पेश करता था। वह हिन्दुओं को अपने पैरों की धोबन पिलाता था। हिन्दुओं को छोड़ और लोग आते तो वह उन्हें पीने नहीं देता था, बल्कि झिड़क देता था। (स्मिथ और बदायूनी)

जिजिया - अकबर ने आम हिन्दुओं पर जिजिया कर लगा रखा था। जिजिया वह कर था जो मुस्लिम राज में गैर-मुस्लिमों को जीने का अधिकार लेने के लिए देना पड़ता था। रणथम्भोर की सन्धि में बूंदी के शासक को जिजिया कर से विशेष छूट दी गई थी।

स्मिथ के अनुसार - अकबर अपने आप को सारी प्रजा का उत्तराधिकारी के रूप में समझता था तथा मृतक की सारी सम्पत्ती को ले लेता था। फिर बादशाह की कृपा से ही परिवार वाले फिर से काम धंधा शुरु कर पाते थे।

डाक्टर आशीर्वादी लाल श्रीवास्तव अपनी पुस्तक 'अकबर महान' में लिखते हैं - शर्फुद्दीन अकबर के सेनापतियों में से एक था। उसने आमेर (प्राचीन जयपुर) के तत्कालीन नरेश राजा भारमल के विरुद्ध अनेक बार आक्रमण किया। बहुत कुछ छीन-झपट लेने के अतिरिक्त शर्फुद्दीन ने भारमल के तीन भतीजे भी पकड़कर बंधक बना लिए थे और उन्हें मार देने की धमकी दे रखी थी। इनके नाम थे - जगन्नाथ, राजसिंह और खंगर। भारमल के सम्मुख सर्वनाश उपस्थित था। इसलिए अत्यन्त असहाय अवस्था में उसने अकबर द्वारा मध्यस्थता तथा उसके साथ समझौता चाहा। भारमल के तीनों भतीजों की मुक्ति के लिए अकबर ने एक निर्दोष, असहाय राजकुमारी को उसके सम्मुख समर्पण की शर्त लगा दी थी। सांभर नामक स्थान पर राजकुमारी अकबर को सौंप दी गई। तभी तीनों राजकुमारों को छोड़ा गया। इसके साथ-साथ बड़ी धन राशी भी देनी पड़ी थी।

ऐसे ही दूसरे राजपूत राजाओं की कन्याओं को अकबर को सौंपा गया था। जैसलमेर के राजा हरराय ने तथा डूंगरपुर के राजा आसकरण ने अपनी बेटियां अकबर के हरम में भेजी थीं। बीकानेर के राजा कल्याणमल को अपने भाई काहन की बेटी अकबर के हरम में भेजनी पड़ी क्योंकि उसकी अपनी बेटी विवाह योग्य नहीं थी। कांगड़ा उर्फ नगरकोट के शासक विधिचन्द ने अकबर के हरम के लिए डोला भेजने से मना कर दिया तो अकबर के सैनिकों ने ज्वालामुखी देवी के मन्दिर में 200 काली गाएं काटकर उनके खून से मन्दिर के द्वारों व दीवारों को लथपथ कर दिया था। (राजेश आट्टा)

अकबर के नवरत्न - टोडरमल जनता से धन वसूलने की उस प्रणाली के निर्माण में लगा था जिसमें उनसे धन वसूलने के लिए उनको कोड़े लगाए जाते थे, अन्यथा उन्हें अपनी पत्नी और बच्चे बेचने पड़ते थे। अबुल फजल बड़ा चापलूस था जो शहजादा सलीम द्वारा मरवा डाला गया था। फैजी एक मामूली सा कवि था जो अकाल मृत्यु को प्राप्त हुआ था। बीरबल युद्ध में मारा गया था। उसके नाम से प्रसिद्ध बुद्धि-चातुर्य, हास्य-व्यंग्य एवं हाजिर-जवाबी की कथाएं वास्तव में किसी और का कला कौशल था। वित्तमंत्री शाह मंसूर का वध तो स्वयं अबुल फजल ने अकबर के आदेश पर ही

किया था। राजा भगवान दास ने अपनी स्त्रियों, पुत्रों और भाई भतीजों समेत सबको अकबर की सेवा में लगा रखा था। फिर भी उसके साथ बादशाह का व्यवहार बहुत निन्दनीय था। इस बात से दुखी होकर उसने अपने पेट में अपना ही छुरा घोंप लिया था। शराब के नशे में मस्त अकबर ने एक बार मानसिंह का गला दबा दिया था। अकबर के दरबार के चित्रकार दसवन्त ने अपनी हत्या छुरा घोंपकर करली थी।

मुगल दरबारों में स्थिति इतनी असह्य थी कि अपने जीवन, सम्मान, महिलाओं, घर की पवित्रता तथा धार्मिक मान्यताओं के अपमान से दुखी हिन्दू लोग निराशा, पागलपन और मृत्यु को प्राप्त होते थे। अपना सब कुछ अकबर की सेवा में लगाने वाला टोडरमल भी स्थिति से परेशान होकर त्यागपत्र देकर बनारस चला गया था।

कृष्ण चन्द्र गर्ग
831 सैक्टर 10
पंचकूला, हरियाणा
0172-4010679